International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

# हरियाणा की चुनावी राजनीति में बदलते मुद्दे – एक विश्लेषण

कीर्ति
रिसर्च सकोलर,
राजनीति विज्ञान विभाग,
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय,
रोहतक।

**शोध आलेख सारः** प्रस्तुत शोध प्रपत्र में मैंने हरियाणा की राजनीति में बदलते मुद्दों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। इसमें उन सकारात्मक बदलावों की बात की गई है जो पिछले कुछ वर्षो में हुये है। यहां मैंने यह बताने का भी प्रयास कया है कि चुनाव के समय मतदाताओं को प्रभावित करने वाले कारक कौन–कौन से है व इनमें वर्तमान में क्या परिवर्तन हो रहे है। अंत में एक समीक्षात्मक निष्कर्ष करते हुये मतदाताओं की जागरूकता का महत्व बताया गया है।

**मुख्य शब्दः** आनर किलिंग, खाप पंचायत, सुशासन, जातिवाद, महम काण्ड।

## हरियाणा की चुनावी राजनीति में बदलते मुद्दे –

भारत में आज चुनावी राजनीति में नवीन प्रवृतियाँ उभर रही है। आज राजनीतिक प्रणाली में व्यापक बदलाव देखने को मिल रहे है। 1950–60 के दशक वाली अनपढ़, मूक, अबोध जनता, सुशिक्षित, जागरूक व सशक्त हो उठी है आज चुनाव के मुद्दे व चुनाव की राजनीति बदली है व तेजी से बदलावों की ओर है।

ठन उपरोक्त बदलावों से हरियाणा की राजनीति भी अछूती नही है। हालांकि हरियाणा की अपनी एक अलग क्षेत्रीय पहचान व अलग राजनीतिक परिदृश्य रहा है किंतु सामान्य बदलाव हरियाणा की राजनीति को भी समेट रहे है। आज हरियाणा की साक्षरता दर 76 प्रतिशत है। आर्थिक विकास के मामले में हरियाणा उच्च प्रति व्यक्ति आय वाले राज्यों में शामिल है। इस कारण चुनाव के मुद्दे व चुनाव से सम्बन्धित व्यवहार में बड़े स्तर पर बदलाव दृष्टिगोचर हुये है। इन बदलावों को हम निम्न बिन्दुओं के तहत समझने का प्रयास करेंगें।

### 1– जातिवाद से विकास के मुद्दे पर उभरता मतदाता वर्ग –

हरियाणा की चुनावी राजनीति की मुख्य विशेषता जातिवाद पर केन्द्रित राजनीति रही है। हमेशा ही जाति के मुद्दे ने विकास को पिछे धकेला है। जाट व पिछड़ा वर्ग के मध्य तो मतदाता समुदाय हमेशा बंटा हुआ दिखता रहा है किंतु पिछले 3–4 वर्षों से ऐसा प्रतीत हुआ की हरियाणा की चूनावी राजनीति में जाति का तत्व कुछ कम प्रभावी रहा है तथा विकास के मुद्दें को मतदाताओं ने प्राथमिकता पर रखा है। हालांकि आज भी जाति तक महत्वपूर्ण निरोधक कारक है। फिर चाहे वह राजनीतिक दलों के पास टिकट बांटने का मामला हो या मतदाताओं द्वारा वोट डालने का मामला सभी

में जातिवाद को प्राथमिकता दी जाती है। किंतु हरिाणा की युवा जनता व शिक्षित बुद्धिजीवी वर्ग जाति को निरपेक्ष कारक के रूप में न लेकर इसके साथ विकास को भी मुख्य मुद्दा बना रहे है पिछले लोकसभा चुनाव व राज्य विधानसभा चूनाव (2014 में) ये देखने को मिला है कि एक सीट से दो जाट नेता खड़े होने पर मतदाताओं ने विकास की बात करने वाले नेता को भारी बहुमत से चूना। जहां कांग्रेस की छवि भ्रष्ट व अवरूद्ध पार्टी की बन चुकी थी तब मतदाओं ने परंपरागत जाट नेताओं को छोड़कर भाजपा दल से खड़े हुए सामान्य जाट नेताअें को चूना हरियाणा में भाजपा की जीत इस बात को ओर अधिक सिद्ध करदेती है।

अतः कह सकते है आज भी राष्ट्रीय स्तरकी तरह हरियाणा में भी जातिवाद एक प्रभावी मुद्दा है किंतु शिक्षित युवा विकास को भी महत्व दे रहे है।

**2– भ्रष्टाचार से सुशासन की ओर –**

हरियाणा के गठन के बाद सर्वाधिक लम्बे समय तक कांग्रेस का शासन रहा है तथा कॉग्रेस ने प्रभावी जाति के बडे नेता प्रदान किये है। ऐसे नेता जो अपनी कौम का उग्रता के साथ राजनीति में प्रयोग करते है इस उग्र भावना में सरकारी नौकरियों, प्रशासन व अन्य सभी जगहों पर व्यापक भ्रष्टाचार को जन्म दिया। हरियाणा की छवि राष्ट्रीय स्तर पर ऐसे राज्य की मानी जाती रही है जिसमें प्रत्येक सरकारी पद के लिए राजनीतिक पहचान व भारी भरकम धन राशी की आवश्यकता होती है। यहां सामान्य लोग शिक्षा व योग्यता के बाद भी पदों से वंचित रह गये।

ऐसे में मध्यम वर्ग व छात्र वर्ग सर्वाधिक पीड़ित वर्ग रहा है। इस कारण इस वर्ग में कोई तीव्र जागरूकता देखने को मिली है पिछले 3–4 वर्षों से यह वर्ग पारदर्शी व स्वच्छ प्रशासन की चाह में एक स्पष्ट छवि वाली राजनीतिक व्यवस्था चाह रहा है पिछले चूनावों में भारतीय जनता पार्टी की भरी जीत व कांग्रेस की हार ने इस बात को सिद्ध किया की पिछली सरकारें एक स्वच्छ व निष्पक्ष प्रशासन प्रदान करने में असफल रही।

हालांकि भारतीय जनता पार्टी की वर्तमान सरकार का मूल्यांकन होना अभी बाकी है चूनाव अभी 2019 में होना है किंतु सामान्य जन मानस में सरकार की छवि भ्रष्टाचार मूक्त प्रतीत हो रही है। अतः हरियाणा की चूनावी राजनीति सुशासन की ओर बल दे रही है।

**3– लैंगिक मुद्दों पर बलः**

जैसा कि सर्वविदित है कि हरियाणा में महिलाओं की स्थिति आरंभ से ही दयनीय रही है। लैगिक आसमानता को हरियाणा  की पुरूषवादी संस्कृति ने एक सांस्कृतिक पहचान, मान मर्यादा व पारिवारिक इज्जत के नाम पर खूब बढ़ावा दिया है ऑनर किलिंग की घटनाओं ने हरियाणा को विश्व स्तर पर कलंकित किया है, पिछले दशक तक राजनीति में भी लैंगिंक असमानता व महिलाओं की दबी स्थिति को राजनेता समर्थन करते थे। तथा कोई भी राजनीतिक नेता व दल खाप पंचायतों के विरूद्ध या महिलाओं के आजादी के खुलकर पक्ष में नही बोलता था। हालांकि आज भी हरियाणा की सोच व संस्कृति पर वही प्रभाव विद्यमान है किंतु यह प्रभाव पिछले 8–10 वर्षों से कुछ कम अवश्य हुआ है।

आज राजनीति में युवा व शिक्षित लोगों का प्रतिशत बढा है। जिसमें परंपरावादी सोच के लोग कमजोर पड़े है। राजनीति में भी लैगिंक मुद्दे अब महत्व प्राप्त कर रहे है। हरियाणा सरकार अंर्तजातिय विवाह, बेटी जन्मोत्सव, शिक्षित बालिकाओं का सम्मान जैसे मुद्दों को प्रोत्साहन देकर हरियाणा की राजनीति व संस्कृति के कलंकित पक्ष को मिटाने का प्रयास कर रही है।

संभावना है कि आगामी चूनावों में लैंगिक समानता का मुद्दा प्रभावी चूनावी मुद्दा रहेगा क्योंकि कॉग्रेंस भी बर्तमान सरकार की इस नीति से चिंतित है तथा अगले चुनाव में इसे बेहतर ढंग से पेश करने का प्रयास करेगी। अतः हरियाणा की चूनावी राजनीति में लैंगिंक समानता प्रमुख बदलाव है।

**4– उग्रता व भय की राजनीति का दौर समाप्ति की ओर :**

1990 के दशक तक हरियाणा की राजनीति में बल व धन इन दो काकरों को कोई भी चूनाव जीतने के लिए महत्वपूर्ण माना जाता था। राजनीतिक चूनावों के समय गाँव के गाँवों से भय के बल पर एक दल के पक्ष में मतदान करवाया जाता था। महम काण्ड 1990 इसका उदाहरण है। इसके अलावा राजनीतिक दलों के अपने लठेत गाँव–गाँव घूमकर लोगों को मतदान कराने के लिए भयभीत करते थे तथा पैसों से वोट खरीद लिये जाते थे। इस प्रकार राजनीति उग्रता व भय पर आधारित थी। राजनीतिक दल चुनावी खर्च के लिए लोगों से जबरदस्ती चूनावी चन्दा इक्ट्ठा करते थे। इसके अलावा आयाराम गयाराम की धारणा प्रभावी थी।

ये सभी घटनाऐं हरियाणा की राजनीति की एक कलंकित तस्वीर पेश करती है। किंतु पिछले लगभग 8–10 वर्षों से जन जागरूकता में वृद्धि व राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावी चूनावी तंत्र के विकास के कारण हरियाणा की राजनीति में उग्रता व भय का तत्व काफी हद तक समाप्ति की ओर है हालांकि धन आज भी एक मुख्य कारक हैं किंतु बदलाव तेजी से हो रहा है।

इस प्रकार उपरोक्त बिन्दु हरियाणा की चूनावी राजनीति पर प्रकाश डालते है। हरियाणा की वर्तमान सरकार के सुशासन की धारणा ने बदलावों को बढ़ावा दिया है साथ ही सुशिक्षित जागरूक जनमत ने भी इस बदलाव को प्रभावी रूप दिया है।

**सन्दर्भः**

1– power politics in Haryana : A view from the Bridge – भीम सिंह दहिया ज्ञान पब्लिकेशन हाऊस सनई दिल्ली (2008)
2– गुस्ताखी मॉफ हरियाणा – पवन कुमार बंसल
3– द हिन्दू न्यूज पेपर – 20 सिम्बर, 2013
4– द इण्डियन एक्सप्रैस न्यूज पेपर 20 नवम्बर, 2016
5– www.haryana.gov.in